श्रम विभाग

श्रादेश

दिनांक 10 नवम्बर, 1987

सं श्रो वि वि (एफ डी 133-87 44143 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं मयूर टूल्ज, प्रा० लि०, 70, इण्डस्ट्रीयल एस्टेंट, सैक्टर 6, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री मुमेर सिंह, पुत्र श्री मुखी राम मार्फत हिन्द मजदूर सभा, 51-ए, सैक्टर 6, फरीदाब द तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इस के बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

मीर वृंकि त्रियामा के राज्यवाल इस विवाद को न्यायानिर्मय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अन, सौद्योगिक विनाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का अयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7-क के अधीन गठित भौद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदादाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विनादग्रस्त मामला/मामले हैं स्थाय विनाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेत् निदिष्ट करते हैं: .

क्या श्री सुमेर सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

स॰ ग्रो॰ वि॰/एफ डी/239-87/44150.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं॰ हेमला इम्ब्राईडरी मिल्ज प्रा॰ नि॰, 14'6, मथुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री राम सागर सिंह मार्फत एटक ग्राफिस, नजदीक एल. ग्राई. सी. ग्राफिस मार्फिट नं॰ 1, एन ग्राई. टी., फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रम, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा भवान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7-क के ग्रिधीन गिटित ग्रीद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, प्रशिदाबाद, को भीचे विनिद्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रश्किक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले है ग्रथवा विवाद से सुसंगत था सम्बन्धित मामला/मामले है न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निविष्ट करते हैं:—

क्या श्री राम सागर सिंह की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० भ्रो० वि०/यमुना/77-87/44157.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि (1) परिवहन भ्रापुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) जनरल मैनेजर, हरियाणा रोडवेज, यमुनानगर के श्रमिक श्री रणधीर सिंह, पुत्र श्री राम सिंह, गांव बम्बेहड़ी, तहसील भ्रसंध, जिला करनाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, भव, भौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिस्चना सं• 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रमैल, 1984 द्वारा उवत ग्रिधिनियम की घारा 7 के ग्रिधीन गरित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय एकं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उवत प्रवन्धकी नथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री रणधीर सिंह की सेवाश्रों का समायन भ्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राइत का हकदार है ?

श्रार. एस. ग्रग्नाल,

उप सचिव, हरियाणा सरकार श्रम विभाग।